C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय: हिंदी B

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क,ख,ग,और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
7. पाँच अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

खण्ड-क

[अपठित अंश]

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [10]

एक चोर किसी मंदिर का घंटा चुराकर ले गया था। वन में जाते हुए उसका सामना बाघ से हो गया और चोर बाघ के द्वारा मारा गया। उसी वन में वह घंटा बंदरों के हाथ में पड़ गया। वन बहुत घना था। बंदर झाड़ियों के अंदर रहते थे। जब उनकी मौज होती, वे घंटा बजाते।

घंटे की आवाज सुनकर समीप के नगर में यह अफवाह फैल गयी के जंगल में भूत रहता है और उसका नाम घंटाकरण है। उसके कान घंटे के समान हैं,

जब वह हिलता है, तो कानों से घंटे की आवाज आती है। इस अफवाह से लोग ऐसे भयभीत हुए कि जंगल की ओर भूलकर भी कोई न जाता था। सब जंगल से दूर-दूर ही रहते थे। जंगल से लकड़हारे लकडियाँ न लाते थे, चरवाहे जंगल में पशुओं को चराने न ले जाते थे। किसी में इतना हौसला न था कि जंगल में जाने का प्रयत्न कर पाता।

इस प्रकार सारे का सारा जंगल किसी भी काम में न आकर कल्पित घंटाकरण भूत की राजधानी बन गया। अब तो राजा को भी बड़ी चिंता हुई। उसने सयानों और जादूगरों को इकट्ठा किया और कहा कि भाई इस भूत को जंगल से निकालो, वरना सारा जंगल और हजारों रुपये की सालाना आमदनी बेकार हाथ से जा रही है।

सब लोगों ने अपने-अपने उपाय करने प्रारंभ किए। पंडितों ने चंडी का जाप किया, हनुमान चालीसा का पाठ किया। मुल्लाओं ने कुरान का पाठ आरंभ किया। किसी ने भैरों को याद किया, किसी ने काली माता की मन्नत की, किसी ने पीर-पैगंबर को मनाया, किसी ने जादू-टोना किया। इस पर भी घंटाकरण किसी के काबू में न आया। घंटे का शब्द सदा की भाँति सुनाई देता रहा और लोग समझते रहे घंटाकरण घंटा बजा रहा है।

तभी एक चतुर मनुष्य उधर कहीं से आ निकला। वह भूत-प्रेत, चंडी-मुंडी, पीर-पैगंबर, जादू-टोने आदि कपोल-कल्पित मिथ्या बातों पर विश्वास नहीं करता था। उसने विचारा कि वन में हो न हो कोई विशेष बात होगी। संभव है कि वन में डाकू रहते होंगे और उन्होंने वन को अपने रहने के लिए सुरक्षित बनाने को यह पाखंड रचा हो या कहीं बंदरों के हाथ में घंटा न पड़ गया हो। ऐसा दृढ़ निश्चय कर वह चतुर मनुष्य साधु का वेश धर कर जंगल में घुसा। अंदर जाकर देखा, तो उसने अपने अनुमान को सही पाया। लौटकर उसने नगर निवासियों से कहा, “भाइयो ! मैंने भूत को पकड़ने का उपाय

विचार लिया है। आप लोग मुझे एक गाड़ी भुने चने दें, तो मैं कल ही भूत को पकड़ लेता हूँ।"

नगर के निवासी और राजा भूत के नाश के लिए सब कुछ करने को तैयार थे, झटपट सब सामान इकठ्ठा कर दिया। चतुर मनुष्य ने जंगल में जाकर चने बंदरों के आगे डाल दिए। इधर सब बंदर चने खाने में लगे, उधर उसने घंटा उठा कर नगर की राह ली। अब क्या था, सारे नगर में और राजसभा में उस चतुर मनुष्य को बडा आदर मिला, फिर उसने सब भेद खोलकर लोगों के मिथ्या विश्वास को तोड़ा। उन्हें भ्रम के भूत से मुक्ति दिलाई।

इस कहानी के समान अनेक बातों के भ्रम मे पड़कर मनुष्य ने भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि अनेक प्रकार की कल्पनाएँ कर ली हैं। लोग भय और मिथ्या विश्वास के कारण वास्तविकता का पता नहीं लगाते हैं और झूठे उपाय कर-करके थकते हैं। वास्तव में भूत-प्रेत आदि यह सब ठग-लीला है। जादू-टोने सब लूटने-खाने के बहाने हैं। इनसे सदा बचने में ही मानव की भलाई है। मिथ्या विश्वास से ही मनुष्य तरह-तरह के कष्टों में पड़ जाता है। अतः यथासंभव मिथ्या विश्वास दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

1. नगर में क्या अफवाह फैल गई थी और इस अफवाह का क्या कारण था? [2]

   उत्तर : नगर में यह अफवाह फैल गई थी कि जंगल में एक 'घंटाकरण नाम भूत रहता है। उसके कान घंटे के समान हैं। जब वह हिलता है, तो उसके कानों से घंटे की आवाज आती है। इस अफवाह का कारण यह था कि एक बंदर के हाथ में घंटा आ गया था। जब वह उसे बजाता था, तो लोगों को घंटाकरण भूत का भ्रम हो जाता था।

2. जंगल किसकी राजधानी बन गया था? इससे नगर निवासियों पर क्या प्रभाव पडा? [2]

उत्तर : जंगल किसी कल्पित घंटाकरण भूत की राजधानी बन गया था। नगर निवासी भयभीत हो गए थे। लकडहारे जंगल से लकडी नहीं लाते थे और चरवाहे पशुओं को चराने वहाँ नहीं जाते थे, इस प्रकार से सारे आवश्यक कार्य ठप्प हो गए थे।

3. राजा की चिंता का क्या कारण था? भूत को जंगल से निकालने के क्या-क्या उपाय किए गए? [2]

उत्तर : राजा की चिंता का यह कारण था कि जंगल से होने वाली हजारों रुपए की सालाना आमदनी बंद हो गई थी। भयवश कोई भी जंगल में नहीं जाता था तथा जंगल के सारे कार्य रुक गए थे।

जंगल से भूत को भगाने के लिए मुस्लिमों ने कुरान का पाठ किया, पीर-पैगंबर को मनाया गया, भैरों तथा काली माता को भी मनाया गया, जादू-टोना किया गया, पर कोई भी सफल न हुआ। पंडितों ने चंडी कर जाप तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया।

4. चतुर मनुष्य का क्या अनुमान था? उसने नगर निवासियों को भूत से किस प्रकार मुक्ति दिलाई? [2]

उत्तर : चतुर मनुष्य का स्पष्ट मत था कि जंगल में कोई भूत हो ही नहीं सकता, क्योंकि भूत केवल कल्पना में होते हैं। उसका अनुमान था कि या तो यह किसी डाकू का षडयंत्र है या फिर किसी बंदर के हाथ में घंटा आ गया है। उसने साधु के वेश में जंगल में जाकर बंदर की बात को सत्य पाया। उसने बहुत सारे चने ले जाकर जंगल में बिखेर दिए। जब बंदर चने खाने लगे, तो उसने घंटा उठा लिया और नगरवासियों को भूत के भ्रम से मुक्ति दिलाई।

5. प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिली? [1]

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश से हमें यह शिक्षा मिली कि हमें अंधविश्वासी नहीं होना चाहिए। जनता में जागरूकता लानी चाहिए ताकि वे ऐसे अंध विश्वास से बचे।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें। [1]

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'घंटाकरण भूत' है।

खण्ड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. शब्द किसे कहते है? [2]

उत्तर : शब्द वर्णों या अक्षरों के सार्थक समूह को कहते हैं।

उदाहरण के लिए क, म तथा ल के मेल से 'कमल' बनता है जो एक खास के फूल का बोध कराता है। अतः 'कमल' एक शब्द है।

प्र. 3. निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [3]

(क) व्यायाम करो। स्वस्थ रहो। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

उत्तर : व्यायाम करो और स्वस्थ रहो।

(ख) आप द्वार पर बैठें। उसकी प्रतीक्षा करें। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जब आप द्वार पर बैठे तब उसकी प्रतीक्षा करें।

(ग) बालक रोता रहा और चुप हो गया। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : बालक रो-रोकर चुप हो गया।

प्र. 4. (क) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। [2]

- त्रिरंगा
- श्वेताम्बर

समस्त पद	विग्रह	समास
त्रिरंगा	तीन रंगों का समाहार	द्विगु समास
श्वेताम्बर	सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)	बहुव्रीहि समास

(ख) निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए।[2]

- चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु
- नीली है जो गाय

विग्रह	समस्त पद	समास
चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु	चतुभुर्ज	बहुव्रीहि समास
नीली है जो गाय	नीलगाय	कर्मधारय समास

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप में लिखिए। [4]

(क) मेरे को किसी की चिंता नहीं।

उत्तर : मुझे किसी की चिंता नहीं।

(ख) वह दिनों-रात काम करता है।

उत्तर : वह दिन रात काम करता है।

(ग) हम आपके घर कल आएगा।

उत्तर : हम कल आपके घर आएँगे।

(घ) मेरे से पढ़ा नहीं जाता।

उत्तर : मुझसे पढ़ा नहीं जाता।

प्र. 6. उचित मुहावरों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। [4]

1. अगर मेहनत नहीं करोगे तो सपने मिट्टी मे मिल जाएँगे।
2. जब चापलूस रिश्तेदारों ने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली तब उसकी आँखें खुलीं।
3. दुष्ट रामू से पिंड छुडाना तो बहुत मुश्किल है।
4. अब तो यही बात हो गई कि कोई भी ऐरा-गैरा आएगा और उपदेश देने लगेगा।

खण्ड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक]

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: [2+2+2=6]

(क) वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया।

उत्तर : वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से जवाब दिया कि वह कौन है, उसे क्यों घूर रहा है और उसके इस तरह असंगत प्रश्नों के उत्तर वह क्यों दे? वह अपने गाँव के अतिरिक्त किसी अन्य युवक के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है और यह बात वह भी जानता है।

(ख) धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर : धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस पुलिस की जनता पर लाठियाँ बरसाने, लोगों के घायल होने और सुभाष बाबू की गिरफ्तारी के कारण टूट गया।

(ग) दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर : दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में यह परिवर्तन आया कि वह पहले की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही स्वच्छंद और मनमानी करनेवाला बन गया था।

(घ) अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उत्तर : अरब में लशकर को नूह नाम से याद करने का कारण यह है कि एक बार उन्होंने एक जख्मी कुत्ते को दुत्कार दिया था और इसी कारण वे उम्र-भर रोते रहे थे।

प्र.8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. लेखक रवीन्द्र केलकर के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : लेखक के अनुसार सत्य वर्तमान है। उसी में जीना चाहिए। हम अक्सर या तो गुजरे हुए दिनों की बातों में उलझे रहते हैं या भविष्य के सपने देखते हैं। इस तरह भूत या भविष्य काल में जीते हैं। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। हम जब भूतकाल के अपने सुखों एवं दुखों पर गौर करते हैं तो हमारे दुख बढ़ जाते हैं। भविष्य की कल्पनाएँ भी हमें दुखी करती हैं। क्योंकि हम उन्हें पूरा नहीं कर पाते। जो बीत गया वह सत्य नहीं हो सकता।

जो अभी तक आया ही नहीं उस पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। वर्तमान ही सत्य है जो कुछ हमारे सामने घटित हो रहा है। वर्तमान ही सत्य है उसी में जीना चाहिए।

अथवा

2. कारतूस' पाठ के आधार पर लिखिए कि जांबाज़ के जीवन का लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से बाहर करना था।

उत्तर : जाबांज़ अर्थात् वज़ीर अली के दिल में अंग्रेजों के खिलाफ़ नफरत भरी हुई थी। उसने पाँच महीने के अंतर पर ही अवध के दरबार से अंग्रेजों को बाहर कर दिया था। वजीर अली सआदत अली को अवध से हटा कर वहाँ का प्रशासक बनना चाहता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि जाबांज़ के जीवन का लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से बाहर करना था।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए। [2+2+2=6]

(क) मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मीराबाई की भाषा शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसके साथ ही गुजराती शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है। मीराबाई के पदों में भक्तिरस है। इनके पदों में अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का प्रयोग हुआ है। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। इनके पदों में माधुर्य गुण प्रमुख है और शांत रस के दर्शन होते हैं।

(ख) कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

उत्तर : यह तोप हमारी विजय और आज़ादी के प्रतीक के रूप में एक महत्त्व की वस्तु बन गई है। भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है। इससे शहीद वीरों की याद दिलाई जाती है ताकि लोगों के मन में राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा मिले।

(ग) अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर : कबीर का कहना है कि स्वभाव को निर्मल रखने के लिए मन का निर्मल होना आवश्यक है। हम अपने स्वभाव को निर्मल, निष्कपट और सरल बनाए रखना चाहते हैं तो हमें अपने आँगन में कुटी बनाकर सम्मान के साथ निंदक को रखना चाहिए। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

(घ) 'आत्मत्राण' कविता की पंक्ति 'तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में' का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि वह सुख के दिनों में भी परमात्मा को हर पल श्रद्धा भाव से याद रखना चाहता है,

वह एक पल भी ईश्वर को भुलाना नहीं चाहता। कवि दुख-सुख दोनों में ही प्रभु को सम भाव से याद करना चाहते हैं।

प्र. 10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर : कवि ने तालाब की तुलना दर्पण से की है क्योंकि तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ व निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दोनों ही पारदर्शी, दोनों में ही व्यक्ति अपना प्रतिबिंब देख सकता है। तालाब के जल में पर्वत और उस पर लगे हुए फूलों का प्रतिबिंब स्वच्छ दिखाई दे रहा था। काव्य सौंदर्य को बढ़ाने के लिए, अपने भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ऐसा रूपक बाँधा है।

अथवा

2. भाव-भक्ति की जागीर क्यों कहा गया? उसके लिए क्या आवश्यक है? मीरा के पद के आधार पर लिखिए।

उत्तर : मीरा अपने आराध्य श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं। मीरा के लिए अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण की भक्ति ही जागीर थीं। प्रस्तुत पद में मीरा की भावपूर्ण कृष्ण-भक्ति को ही उनकी जागीर कहा गया है। ऐसी जागीर पाने के लिए एक भक्त में पूर्णतया समर्पण की भावना का होना आवश्यक है जो हमें मीरा जैसी भक्तिन में ही दिखाई देता है। मीरा अपने आराध्य के प्रति पूर्णतया समर्पित थी। उन्हें पाने के लिए वह प्रभु की चाकरी करने के लिए भी तैयार रहती हैं।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [6]

1. एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा? [5]

उत्तर : एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को कई भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे वह अध्यापकों की हँसी का पात्र होता क्योंकि कमजोर लड़कों के रूप में अध्यापक उसका ही उदाहारण देते थे। फेल होने के कारण उसके कोई नए मित्र भी नहीं बन पाए। मास्टर उसकी किसी भी बात पर ध्यान ही नहीं देते थे। वह किसी से शर्म के मारे खुलकर बातें नहीं कर पाता था।

2. आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? 'सपनों के-से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पहले उन्हें सजा के नाम पर कठोर यातनाएँ दी जाती थीं। स्कूल में विद्यार्थी विशेषकर पीटी मास्टर से बहुत डरते थे। वे उन्हें काफी पीटते एवं डाँटते थे। कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापक भी पाठ याद न करके लाने पर मुर्गा बनाते थे। इससे बच्चों की टाँगों में दर्द एवं जलन होने की शिकायत होने लगती है। सजा का यह ढंग अत्यंत बर्बरतापूर्ण है।

वर्तमान-काल में बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिया जाता।

वर्तमान काल में बच्चों को शारीरीक दंड नहीं दिया जा सकता।

अध्यापकों को बच्चों के मनोविज्ञान को समझने का प्रशिक्षण

दिया जाता है। मेरे विचार से शारीरिक दंड पर रोक लगाना एक आवश्यक कदम है। बच्चों को विद्यालय में शारीरिक दंड से नहीं अपितु मानसिक संस्कार द्वारा अनुशासित करना चाहिए। इसके लिए पुरस्कार, प्रशंसा, उत्साहित करना आदि उपाय ठीक रहते हैं।

खण्ड - घ

[लेखन]

प्र.12. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए: [6]

त्योहारों का महत्त्व

भारत में विभिन्न धर्म विद्यमान हैं। इस कारण यहाँ उनसे जुड़े विभिन्न त्योहार विद्यमान है। त्योहार या उत्सव हमारे सुख और हर्षोल्लास के प्रतीक है जो परिस्थिति के अनुसार अपने रंग-रुप और आकार में भिन्न होते हैं। सभी त्योहारों से कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी हुई है और इन कथाओं का संबंध तर्क से न होकर अधिकतर आस्था से होता है। ये त्योहार भारत की एकता, अखण्डता और भाईचारे का प्रतीक हैं। ये त्योहार हमारी प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं और हमारी पहचान भी हैं।

भारत संस्कृति में त्योहारों एवं उत्सवों का आदि काल से ही काफी महत्त्व रहा है। परंतु आज यह देखकर दुख होता है कि लोग त्योहार के प्रति नीरसता दिखाने लगे है। इसके कई कारण है- आज की जीवनशैली, बढ़ता काम का तनाव, महंगाई आदि।

आज के युग में मनुष्य बहुत अधिक व्यस्त रहता है। उसे समय ही नहीं कि त्योहार के लिए तैयारी करे। इसके अलावा आज महँगाई इतनी बढ़ गई है कि दो वक्त का खाना भी कई लोग मुशिकल से पाते है उसमें त्योहार का

खर्च कहाँ करेंगे। आज के युग में मनुष्य संयुक्त परिवार में नहीं रहता जिससे भी त्योहार मनाने का उत्साह फीका पड़ जाता है।

भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति

किसी भी संस्कृति में अनेक आदर्श रहते हैं आदर्श मूल्य है और मूल्यों का मुख्य संवाहक संस्कृति होती है। हमारे देश की संस्कृति बहुत समृद्ध है। देश में अनेक विदेशी राजाओं के प्रभाव से स्वयं को बचाती हुई तथा अन्य धर्मों के गुणों को आत्मसात करती हुई हमारी संस्कृति फली-फूली है। भारतीय संस्कृति में मुख्य रूप से चार मूल्यों की प्रधानता दी गयी है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। विभिन्न वेद शास्त्र हमारी संस्कृति का हिस्सा है इसके अतिरिक्त भारत की अन्य परम्पराएँ जैसे अतिथि देवो भवः, सामाजिक आचार व्यवहार, शरणागत रक्षा, सर्वधर्म, समभाव, वसुधैव कुटुम्ब कम, अनेकता में एकता जैसी प्रमुख है।

आज पश्चिमी संस्कृति हम पर हावी है। भारत की भाषाएँ वेशभूषा, वस्तुएँ, जीवन शैली सब पश्चिमी हो गई है, जो देश के भविष्य के लिए खतरा है। भारत में संयुक्त परिवार को और पश्चिम में एकल परिवार को महत्त्व दिया जाता है। डिस्को, पब, शराब, सिगरेट आदि पीना जीवन शैली के अंग बन गये है। समाज दिशाहीन हो रहा है युवाओं को अतीत के प्रति कोई सम्मान नहीं है।

पश्चिमी सभ्यता से हम खाना-पीना पहनना सीख सकते हैं तो उनकी तरह अपने देश को सुंदर व साफ़ रखना भी हमें सिखना चाहिए। पश्चिमी सभ्यता से प्रेरित होकर औरत भी अपने विचार प्रकट कर सकती है और घर की चाहरदीवारी से बाहर निकल पाई है।

विज्ञापनों का महत्त्व

आज के युग में विज्ञापनों का महत्त्व स्वयंसिद्ध है। आज विज्ञापन हमारी ज़िंदगी का एक अह्म हिस्सा बन चुका है, सुबह आँख खुलते ही अख़बार में सबसे पहले नज़र विज्ञापन पर ही जाती है। सुई से लेकर रूमाल तक हर चीज विज्ञापित हो रही है। विज्ञापन अपने छोटे से संरचना में बहुत कुछ समाए होते है। वह बहुत कम बोलकर भी बहुत कुछ कह जाते है। विज्ञापन एक कला है। विज्ञापन का मूल तत्व यह माना जाता है कि जिस वस्तु का विज्ञापन किया जा रहा है, उसे लोग पहचान जाएँ और उसको अपना लें। निर्माता कंपनियों के लिए यह लाभकारी है। विज्ञापन अनेक प्रकार के होते हैं। सामाजिक, व्यावसायिक, आदि।

विज्ञापन के लाभ की बात करें तो हम यह कह सकते हैं कि आज विज्ञापन ने हमारे जीवनस्तर को ही बदल डाला है। आज विज्ञापन के लिए विज्ञापनगृह एवं विज्ञापन संस्थाएँ स्थापित हो गई हैं। इस प्रकार इसका क्षेत्र विस्तृत होता चला गया। कोई भी विज्ञापन टीवी पर प्रसारित होते ही वह हमारे जेहन में छा जाता है और हम उस उत्पाद के प्रति खरीदने को लालयित हो जाते हैं।

विज्ञापन बाज़ार में आई नई वस्तु की जानकारी देता है। परंतु इस विज्ञापन पर होनेवाले खर्च का बोझ अप्रत्यक्ष रुप से खरीददार पर ही पड़ता है। विज्ञापन के द्वारा उत्पाद का इतना प्रचार किया जाता है कि लोगों द्वारा बिना सोचे-समझे उत्पादों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। इन विज्ञापनों में सत्यता लाने के लिए बड़े-बड़े खिलाड़ियों और फ़िल्मी कलाकारों को लिया जाता है। हम इन कलाकारों की बातों को सच मानकर अपना पैसा पानी की तरह बहाते हैं। विज्ञापन हमारी सहायता अवश्य कर सकते हैं परन्तु कौन-सा उत्पाद हमारे काम का है या नहीं ये हमें तय करना चाहिए।

विज्ञापन से अनेक लोगों को रोजगार भी मिलता है। यह रोजगार एक विज्ञापन की शूटिंग में स्पॉट बॉयज से लेकर बाजार में सेल्समेन तक उपलब्ध हो जाता है। अगर कोई कंपनी बाहरी देशों के लिए विज्ञापन बनाती है तो उसे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है जिससे देश की विदेशी मुद्रा कोष में इजाफा होता है और देश की आर्थिक स्थिति बेहतर बनती है।

विज्ञापन के लाभ व हानि दोनों है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसका लाभ किस तरह ले और हानि से कैसे बचे।

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों में पत्र लिखें। [5]

1. आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्त्व (Antisocial elements) आकर बस गए हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया। अपने शहर के पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर उनकी शिकायत कीजिए तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिए।

सेवा में,
पुलिस कमिशनर
आजाद चौक
चंडीगढ़

विषय : नगर में बढ़ते हुए असामाजिक तत्वों के विषय में शिकायती पत्र।

महोदय

मैं माणिकपुर, आजाद चौक का निवासी हूँ। इस पत्र द्वारा में आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराध की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ पिछले कुछ दिनों से कुछ असामाजिक तत्व आ गये हैं जिसके कारण हमारे क्षेत्र में अपराध की घटनाएँ बढ़ गई है। हर आए दिन कहीं न कहीं

से चोरी और लूटमार की घटना सुनाई पड़ती ही रहती है जिसके कारण घरों को अकेले छोड़ना मुश्किल हो गया है, हर समय किसी न किसी को घर में रहना ही पड़ता है। इतना ही नहीं नगर में नशीले पदार्थों का विक्रय खुले आम हो रहा है। सड़कों और गलियों में बच्चों और महिलाओं का निकलना सुरक्षित नहीं रह गया है। बस-स्टॉप तथा चौराहे पर गुंडे किस्म के लोग छेड़-छाड़ करते पाए जाते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि नगर की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस की गश्त बढ़ाई जाए ताकि निवासी सुरक्षित महसूस कर सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

कमल शर्मा

2/42, सरला निवास

आजाद चौक

माणिकपुर

चंडीगढ़

दिनाँक- 27 फरवरी 20xx

अथवा

2. आपका छोटा भाई पढ़ाई में बिलकुल ध्यान नहीं दे रहा है। वह न तो विद्यालय में पढ़ता है और न घर पर। इस बार परीक्षा में उसके अंक भी बहुत कम आए हैं। अतः पढ़ाई का महत्त्व समझाते हुए पत्र लिखिए।

जोसेफ़ एंड मेरी स्कूल

ब्लाक-एन, अलीपुर

पश्चिमबंगाल–42

दिनाँक- 15 जुलाई 20xx

प्रिय अनुज अजय

चिरंजीव रहो।

कल ही पिता जी का पत्र प्राप्त हुआ। उस पत्र को पढ़कर पता चला कि तुम अधिकांश समय खेलकूद में तथा मित्रों के साथ व्यर्थ के वार्तालाप में नष्ट कर देते हो। यह उचित नहीं है। मन को एकाग्र करके पढ़ाई की ओर ध्यान दो। अपनी दिनचर्या नियमित करो और हर क्षण अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखो। तुम्हें ज्ञात होगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। प्रिय अजय याद रखो, समय संसार का सबसे बड़ा शासक है। समय का मूल्य समझना है। यह बात ठीक है कि जीवन में मनोरंजन का भी महत्त्व है, पर मेहनत का पसीना बहाने के बाद।

यदि तुम एकाग्र मन से नहीं पढ़ोगे, तो परीक्षा में असफल होने के कारण तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ।

इसी आशा के साथ पत्र समाप्त करता हूँ कि तुम मेरी बातों पर ध्यान केंद्रित करोगे और आगामी परीक्षा में हमें तुम निराश नहीं करोगे।

तुम्हारा अग्रज

रोनित

प्र. 14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 40 से 50 शब्दों में सूचना लिखें। [5]

1. छात्र-परिषद की बैठक के लिए सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

आर्य पब्लिक स्कूल

हरियाणा

विद्यालय में अनुशासन एवं अनियमितता की समस्याओं पर छात्र-परिषद की बैठक का आयोजन किया गया है –

दिनाँक - 24 फरवरी 20

समय - सुबह 8 बजे

जगह - प्रधानाचार्य कार्यालय

प्रधानाचार्य

21 फरवरी 20_ _

अथवा

2. विद्यालय में आनंद मेले के आयोजन के लिए सूचना तैयार करें।

सूचना

नरसिंग विद्यालय

आनंद मेला

दिनाँक : 2 दिसंबर 200-

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 25 दिसंबर को विद्यालय में आनंद मेले का आयोजन किया जा रहा है। जो विद्यार्थी स्टॉल लगाने के लिए इच्छुक हैं वें अपना नाम अपनी–अपनी कक्षा-अध्यापक और अध्यापिका को दे दें। अधिक जानकारी हेतु विद्यार्थी छात्र परिषद से संपर्क कर सकते हैं।

सचिव

छात्र परिषद

सुनीता वोरा

प्र. 15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 50-60 शब्दों में संवाद लिखें। [5]

1. मालिक और कर्मचारी के बीच हो रहा संवाद लिखिए।

मालिक : आज भी आप देरी से आए!

कर्मचारी : माफ़ करना साहब।

मालिक : कभी-कबार मैं समझ सकता हूँ परंतु लगातार देरी से आना अच्छा नहीं।

कर्मचारी : क्या करूँ घर पर कुछ न कुछ काम से देरी हो ही जाती है।

मालिक : आप ऐसा तर्क न दे समझे?

कर्मचारी : जी ..

मालिक : यहाँ सभी कर्मचारी के घर पर कोई न कोई समस्या रहती है पर सभी आ ही जाते है।

कर्मचारी : मैं आगे से ध्यान रखूँगा।

मालिक : हाँ तुम्हें रखना ही होगा। इससे ऑफिस का शिष्टाचार खराब होता है।

अथवा

2. फूल बेचनेवाला और एक बूढ़े व्यक्ति के बीच हो रहा संवाद लिखिए।

फूलवाला : क्या चाहिए दादाजी?

बूढा व्यक्ति : मोगरे के फूल कैसे दिए?

फूलवाला : यह 30 रु. के है।

बूढा व्यक्ति : इतने से ! हमारे जमाने में तो 2 रु. के इससे ज्यादा मिलते थे। अब ज्यादा से ज्यादा 5 रु. होगा।

फूलवाला : नहीं, दादाजी आपका जमाना गया।

बूढा व्यक्ति : हाँ, मैं भी समझता हूँ, तभी तो 5 रु. बोल रहा हूँ।

फूलवाला : नहीं, 30 रु. ही है। महंगाई बढ़ गई है।

बूढा व्यक्ति : अच्छा। क्या करे दे दो।

फूलवाला : और कुछ?

बूढा व्यक्ति : नहीं बाबा, इतनी महंगाई में इतना ही बस है।

प्र. 16. निम्नलिखित विज्ञापनों में से किसी एक विज्ञापन का आलेख 50 शब्दों में तैयार कीजिए। [5]

1. परफ्यूम का विज्ञापन तैयार कीजिए।

2. साइकिल का विज्ञापन तैयार कीजिए।